आज का पुरुषार्थ 27 June 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" हम है कल्पवृक्ष के जड़ें .. हमसे पूरे वृक्ष को भोजन जाता है .. तो आज से शुद्ध और पवित्र भोजन ही हमसे वृक्ष तक फैले .. ऐसा पुरुषार्थ हमें करना है"*

हम सभी **स्मृति स्वरुप** होकर अपनी स्थिति को बहुत महान बनाये। बाबा ने आकर हमें भिन्न भिन्न स्मृतियाँ दिलाई है हमें। और जगा दिया है हमारी चेतना को। जगा दिया है हमारी inner feelings को।

ज़रा याद करे, बाबा ने हमें याद दिलाया ...

" तुम कल्पवृक्ष के जड़े हो "

जड़ों के द्वारा ही **वृक्ष** को भोजन पानी सबकुछ जाता है। हम जड़ें है। हमारे द्वारा ही पूरे कल्पवृक्ष को **शक्तियाँ** जाती है। हमारे संकल्पों की एनर्जी पूरे कल्पवृक्ष को फैलती है।

ज़रा एक विज़न बनाये ...

मेरे सिर के ऊपर ही कल्पवृक्ष खड़ा है .. और मेरी जो भी स्थिति है .. मेरे जो भी संकल्प है .. अथवा मेरी जैसी **purity** है .. वा **योग** है .. उस सबके vibrations इस पूरे कल्पवृक्ष में फैल रहे है .. एक एक शाखा को जा रहा है

और अगर हम निगेटिव सोचते है, तो यह निगेटिव एनर्जी भी ऐसे ही सम्पूर्ण कल्पवृक्ष में फैल जाती है। हमारी प्योरीटी की पावर सभी आत्माओं को सत्य कर्म करने का बल देती है। उन्हें निष्पाप बनाती है।

तो हममें से बहुत सारी आत्मायें, देवकुल की महान आत्मायें कल्पवृक्ष की जड़ें है। और बाकी सारे सूर्य वंशी और चन्द्र वंशी कल्पवृक्ष का तना है।

तो हमें अपनी स्थिति पर बहुत ध्यान देना चाहिए। हमारी स्थिति साधारण रूप से न बीतें। हमें महान कर्तव्य करने है। हमारा जन्म ही महान कार्य के लिए हुआ है। इसलिए इस स्मृति में सदा रहना है कि ...

" मैं एक जिम्मेदार आत्मा हूँ .. मैं साधारण नहीं हूँ .. इसलिए न तो मेरे अंदर अलवेलापन होना चाहिए .. न व्यर्थ वा साधारण विचारों में जाने का एक नेचुरल संस्कार "

हम अपने विचारों को महान बनाये। अपने **कार्य** को महान बनाये। जितना हमारे कार्य महान होंगे उतना ही जीवन महान होगा। हमारी **स्थिति** महान होंगी।

और विचार करे .. जड़ें हमेशा underground होते है। मिट्टी में होती है। और महिमा होती है **फूलों** की और फलों की। **महत्व सारा है जड़ों का।** आकर्षण होता है फूलों की तरफ, फलों की तरफ।

हम भी जड़ें है। हम underground है। **हमें अपनी महिमा की कामना होनी ही नहीं चाहिए।** क्योंकि जड़ों की महिमा नहीं होती है।

जड़ें तो स्तम्भ होती है जो पूरे वृक्ष का सहारा होती है।

तो हम मान शान की इच्छा से परे में **श्रेष्ठ स्वमान स्थित रहे।** और याद रखें हमें तो स्वयं भगवान सम्मान दे रहा है। मनुष्य से मान लेकर क्या करेंगे।

तो आज सारा दिन हम इस स्वमान में रहेंगे ...

" मैं कल्पवृक्ष की जड़ हूँ .. मेरे द्वारा पूरे कल्पवृक्ष को भोजन जाता है "

और बींच बींच में यह विज़न बनायेंगे कि ...

" मेरे सिर के ऊपर ही कल्पवृक्ष है .. और मेरी योग की तरंगे .. मेरी आत्मा की शक्तियाँ .. पवित्र मन के पवित्र वायब्रेशन्स .. जैसे पूरे कल्पवृक्ष में फैल रहे है "

बहुत सुन्दर अनुभूति होगी, इससे नेचुरल रूप से सेवा होती रहेगी।

हर घन्टे में एकबार अपने सिर के ऊपर इस कल्पवृक्ष को निहारें .. और पूरे कल्पवृक्ष को श्रेष्ठ वायब्रेशन्स देते रहे

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org